बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

Saathi

Date ____

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा / प्रथम खण्ड — रामनारायण प्रसाद

द्वितीय पत्र — दिनांक 08-09-2020

बाल काण्ड के आधार पर पुष्पवाटिका प्रसंग II

महाकवि तुलसीदास ने बालकाण्ड के अन्तर्गत पुष्पवाटिका प्रसंग का बड़ा ही मनोहारी चित्र उपस्थित किया है। जब एक सखी उन दोनो भाइयों – राम और लक्ष्मण के रुप वर्णन करती है तो वह स्वयं भाव विभोर हो उठती है। सीता और उनकी अन्य सखियों की जिज्ञासा उभर पड़ती है क्योंकि आँख ने जो देखा उसका वर्णन करना असंभव सा लगता है और वाणी को ऐसा नेत्र ही नही है कि वह उन दोनो राजकुमारों का चित्र उपस्थित कर सके।

सीता भी अपनी सखियों के साथ उस ओर चल पड़ती है जिधर से श्री राम चन्द्र और लक्ष्मण जी आ रहे होते है। तभी कंगन और करधनी की ध्वनि उन्हे सुनाई पड़ती है इस ध्वनि को सुनकर श्री राम चन्द्र जी हृदय में विचारकर लक्ष्मण से कहने लगते है 'मानो रामदेव ने विश्व को जीतने का संकल्प करके डंके पर चोट मारी है —

"कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही।"

इस तरह कहके श्री राम ने फिर उस तरफ देखा जिधर से सीता आ रही थी। श्री सीता ने मुखरुपी चन्द्रमा के लिए उनके नेत्र चकोर बन गये। सुन्दर नेत्र स्थिर हो गये। टकटकी लग गई। मानों निमि (जनक जी के पूर्वज) ने सकुचाकर पलकें छोड़ दी। अर्थात पलकों में रहना छोड़ दिया। इस तरह का वर्णन किसी भी साहित्य के लिए अनूठा है।

श्री रामचन्द्र जी ने सीता की शोभा देखकर अनंत सुख पाया हृदय से उनकी शोभा की सराहना करते हैं लेकिन मुख से वचन नही निकलते हैं।

सुन्दरता कहुँ सुंदर करई । छबि गृह दीप सिखा जनु बरई ।।
सब उपमा कबि रहे जुठारी । केहि पटतरौं बिदेह कुमारी ।।

अपने अनुज लक्ष्मण से श्री राम जी कहते हैं — हे तात ! यह वही जनकतनया यानी जनक पुत्री जानकी हैं जिसके लिए धनुष यज्ञ हो रहा है । सखियाँ उसे यहाँ गौरी - पूजन के लिए ले आयी हैं और यह बाग में प्रकाश करती फिर रही हैं जिनके अलौकिक सौन्दर्य देखकर मेरा पवित्र मन न जाने क्यों क्षोभ से भर रहा है, इसका कारण विधाता जानें । मेरे मंगलकारी अंग भी फड़क रहे हैं ।

इस प्रकार राम सीता के प्रथम दर्शन को महाकवि तुलसीदास ने अनुपम ढंग से प्रस्तुत किया है । सीता जी अपनी मनोभावना गिरिजा देवी के समक्ष प्रस्तुत कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर अपनी सखियों के साथ लौट जाती हैं पुष्पवाटिका के प्रसंग में शृंगार भाव की प्रस्तुति हुई है यहाँ प्रेमासिक्त वातावरण चित्र उपस्थित हुआ है लेकिन सब कुछ मर्यादित ढंग से ।

महाकवि तुलसीदास की अद्वितीय काव्य क्षमता परिचय बालकाण्ड से ही प्राप्त होता है ।

राम नारायण प्रसाद